माँगन खवास

माँगन खबासक जन्म सहरसा जिलाक पचगछिया गामक धानुक जातिकघरमे सन् 1908 ई० मे भेल छल। हिनक माय पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक परिवारमे खवासिन छलीह। खवासिनक बेटा भेने माँगन खबासक नामसँ प्रसिद्ध भेलाह। गाममे ओ सामान्य शिक्षा पौलनि।

ओ देखबामे बड़ सुन्दर छलाह ओ हुनक कण्ठमे बांसुरीक माधुर्य छल। नेनहिमे कोनो कलाल पारखी एहि सुदर्शन बालककेँ नाचऽ सिखाकऽ, नटुआ बना देलक। माँगन नाचऽगाबह लगलाह। रायबहादुरक दरबारमे गीत-संगीतक झंकार सदिखन होइत रहैत छल। रायबहादुरकेँ जखन आंगनमे माँगनक रूप ओ गुणक परिचय भेलनि तखन माँगन ओहि राजपरिवारमे रहऽ लगलाह। रायबहादुर स्वयं नीक गायक ओ पखावजी छलथि। अतः हिनसँ पुत्रवत स्थान पाबि राय बहादुरसँ गायन-वादनक प्रशिक्षण पावय लगलाह।

माँगन खवासक बढ़ैत लोकप्रियतासँ खीझि हिनक स्वर-साधनके नष्ट करबाक हेतु हिनका सिनूर खुआ देल गेलनि। मुदा स्थितिक जानकारी होइते आवश्यक उपचारक कारणे ओ बाँचि गेलाह। माँगन बड़ परिश्रमी ओ लगनशील छलाह। आधुनिक शिक्षाक अभावोमे ओ संगीतक शिक्षामे पारंगत भऽ गेलाह। ओ नीक जकाँ धूपद, धमार, दादरा, खयाल, ठुमरी, विद्यापति गान ओ लोकगीत गाबथि जाहिसँ श्रोता मंत्रमुग्ध भऽ जाथि। स्वर साधल ओ भास सम्हारल होइत छल।

माँगन खवासक ई ठुमरी बेस लोकप्रिय छल-'बाजूवन्द खुलि-खुलि जाय'। विद्यापति गानमे प्रसिद्ध छल-'सुतल छलहुँ भिनसरवा रे, गरबा मोतिहार।' आर लोकगीत-गायनमे-'हमरा के लागलि नजरिया हो पिया, सास ननद मोरा जनमी वएरिया मोसे भरावे गगरीया हो पिया....।' ओना अपना मने ओ वेसी भजन गावथि। मुदा फरमाइशी गीत सेहो नीक जकाँ गावथि। संगीत कलाक कोनो

आयोजन प्रदर्शन हो, हिनक गायन, वाद्यवादन, भाव भंगिमा आदिसँ श्रोता मंत्रमुग्ध भऽ जाइत छल। ओ अपना युगक अप्रतिम कलाकार छलाह।

मॉंगन छोट कद काठीक छलाह मुदा गठल देह ओ अत्यंत गौर वर्णक। महफिलमे चूड़ीदार पाजामा, जरीदार किमखाव शेरवानी ओ रेसमी पगड़ी पहिर कऽ ओ बैसथि एवं तानपुरा पर गाबथि। मैथिल रीतिए ओ टीक राखथि एवं माथपर सिनूरक ठोप सेहो करथि। ओ पान अवश्य खाथि। एहितरहेँ ओ दरवारी शिष्टतासँ बन्हाओल चरित्रवान, मितभाषी ओ अनुशासित छलाह।

मॉंगन खवासक जीवन अधिकांश समय रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहक दरवारमे वीतल। रायबहादुर स्वयं उच्च कोटिक संगीतज्ञ छलाह। संगीत सम्मेलन ओ सभामे रायबहादुर निश्चित रूपसँ गेल करथि आर मॉंगन सेहो संग रहथिन। एहि तरहेँ जयपुर, जोधपुर, वीकानेर, ग्वालियर, वनारस, पटना, लखनऊ, कलकत्ता, काठमाण्डू आदिक संगीत सम्मेलन सभमे मॉंगन खवास अपन संगीत साधनासँ मिथिलाक मान बढ़ौलनि। हिनक अपन युगक प्रख्यात संगीतज्ञ सभसँ निकटता भेलनि, जाहिमे शीर्षस्थ छथि पं० ओंकार नाथ ठाकुर, करीमखाँ, उस्ताद फैयाज खाँ, नारायणराव, व्यास, पटवर्धन, ब्रह्मानंद गोस्वामी, बड़े अली गुलमखां आदि। पं० ओंकार नाथ ठाकुरक ओ बेस प्रिय छलाह।

एक बेर कलकत्ता संगीत सम्मेलनमे देशक प्रसिद्ध गबैयाक सूचीमे पं० ठाकुर मॉंगन खवासक नाम नहि देखलनि तँ ओ मंचसँ उतरि मॉंगनसँ भेट कऽ गयवाक आग्रह कयलनि। मॉंगन बाजलाह-पंडितजी, हम तँ सुनऽ आयल छी, गाबय नहि। पंडितजी मॉंगनक नाम सूचीमे जोड़ि तीन बजे रातितक, जागि कऽ हुनक गायन सुनलनि। सम्मेलनमे मॉंगनक 'परज वसंत' के सुनि श्रोता लोकनि मंत्र मुग्ध भऽ गेलाह। भोरे बाजा-गाजाक संग पम्पलेट बांटि कलकत्तामे मॉंगन खवासक तीन दिनक स्पेशल प्रोग्राम राखल गेल। एहिसँ हुनक लोकप्रियता बढ़लनि।

तहिना लखनऊमे आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनमे रायबहादुर लक्ष्मीनारायणसिंह गायक सूचीमे माँगनक नाम नहि देखि तामसे आगि भऽ गेलाह। मारि–पीटक स्थिति बनि गेलैक। रायबहादुर एकटा नोटिस शहरमे बँटबौलनि। जे हमर गवैयाकेँ गायनमे हरा देत, हुनका हम पुरस्कार देवनि। जखन उस्ताद फैयाजखांकेँ ई सभ बात मालूम भेलनि तँ ओहो माँगनक पक्षमे ठाढ़ भऽ गेलाह। माँगन चोटीक कलाकार छथि। गायन प्रतियोगितामे आउ। हमहुँ कहैत छी जे माँगनकेँ हरौनिहारकेँ हमहूँ पुरस्कृत करबनि। तखन लोक शांत भेल। लखनऊक संगीत सम्मेलनमे माँगनक संगीतक जादू पसरि गेल आर ओ चोटीक गायकमे प्रमाणित भेलाह। बादमे मिर्जापुरक संगीत सम्मेलन (1932 ई०) मे हिनका स्वर्णपदकसँ सम्मानित कयल गेल।

पचगछिया दरबारमे माँगन लगभग बीसवर्ष रहलाह। वादमे ओ पटनामे गयाक जमींदार अलखनारायण सिंहक शारदा संगीतालयमे 1931 सँ 1933 धरि रहि ओहिठामसँ रायगढ़क नवावक ओहिठाम गेलाह। ओहिठामसँ ओ दरभंगा महाराजक दरबारमे कुमार साहेब विश्वेश्वरसिंहसँ निकटता बढ़लनि। कुमार साहब स्वयं साज बजावथि ओ माँगन गाबथि। कालान्तरमे माँगन खवास बनैलीक कुमार श्यामानंद सिंहक सानिध्यमे अयलाह। मृत्युसँ पहिने ओ कुमार श्यामानंद सिंहक ओहिठाम बनैलीमे छलाह।

हुनक मृत्यु मात्र पैंतीस वर्षक अवस्थामे 1943 ई० मे भऽ गेलनि। बुझाइत छल जे कोनो अभिश गंधर्व अपन काज पूराकऽ गंधर्व लोक घुरि गेलाह मुदा ओ जतवे दिन जीलनि समस्त भारतक संगीत जगतमे ि॥थिलाक कीर्तिध्वज बनल रहलाह।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जन्म भेल छलनि

(क) 1908 मे (ख) 1918 मे

(ग) 1928 मे (घ) 1938 मे

(ii) माँगन खबास लोकप्रिय भेलाह

(क) संगीतमे (ख) नृत्यमे

(ग) चित्रकलामे (घ) बासुरी बादनमे

(iii) कोन प्रख्यात संगीतज्ञक ओ सबसे वेशी प्रिय छलाह

(क) पं० ओंकार नाथ ठाकुर (ख) करीम खाँ

(ग) नारायण राव (घ) व्यास।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) माँगन खबासक संगीत-साधनाक वर्णन करू।

(iii) माँगन खबास कोन-कोन राजदरबारसँ सम्बन्ध रहलाह। उल्लेख करू।

(iv) कोन-कोन प्रसिद्ध संगीत सम्मेलनमे ओ भाग लेलनि आ सम्मानित भेलाह। वर्णन करू।

(v) माँगन खबास संगीत साधक छलाह। विवेचना करू।